हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ: पारम्परिक धरोहर एवं आधुनिक विमर्श

डॉ. वीणा छंगाणी

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की समृद्धि को समझने के लिए उसकी प्राचीन पाण्डुलिपि परम्परा को जानना अत्यावश्यक है। पाण्डुलिपियाँ हमारी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्मृति की अमूल्य निधि हैं, जिन्होंने काव्य, कथा, गद्य, धार्मिक व दार्शनिक ग्रंथों की रक्षा शताब्दियों तक की। हिन्दी में भोजपत्र, ताड़पत्र, चमड़े, कागज़ आदि पर विविध लिपि एवं भाषा में संकलित अप्रतिम ग्रंथों की परम्परा रही है। इसके माध्यम से समाज की साहित्यिक चेतना, वैचारिक प्रवृत्ति एवं भाषागत विकास का गंभीर अध्ययन सम्भव है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं परम्परा

प्राचीन भारत में ज्ञान का संप्रेषण श्रुति एवं स्मृति परम्परा से होता था। हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ आरम्भिक रूप में संस्कृत व पालि भाषाओं में बनाई गईं, किन्तु मध्यकाल में हिंदी क्षेत्र में भी सैकड़ों ग्रंथ लिखे गये। 11वीं–12वीं शताब्दी के आसपास क्षेत्रीय भाषाओं में ग्रंथ लेखन प्रारम्भ हुआ– ब्रज, अवधी, खड़ी बोली आदि में।

मठ-मन्दिर, पाठशाला व राजवंशीय पुस्तकालय प्रमुख केन्द्र थे, जहाँ ये पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित रही हैं। लोककाव्य, वीरगाथा, भक्ति साहित्य के साथ-साथ तंत्र, आयुर्वेद व ज्योतिष संबंधी ग्रंथ भी हिंदी में लिखे गये। पाण्डुलिपियों में भिन्न-भिन्न लिपि जैसे– देवनागरी, महाजनी, कैथी, शारदा, गुरू मुखी आदि के प्रयोग से क्षेत्रीयता और बहुलता का परिलक्षण होता है।

विशिष्ट उदाहरण

रामचरितमानस की पाण्डुलिपियाँ

रामचरितमानस, तुलसीदास द्वारा 16वीं शताब्दी में रचित, हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण पत्र-पुष्पों में मानी जाती है। तुलसीघाट, वाराणसी के मंदिर में इसकी 1648 ई. की हस्तलिखित पाण्डुलिपि उपलब्ध है, जो देवनागरी एवं गुरू मुखी लिपि में लिखी गई है। विभिन्न संस्करणों में पाठभेद, छंद की विविधता और अद्वितीय काव्य शिल्प की झलक मिलती है। संपादन एवं आलोचना के लिए इसकी पाण्डुलिपियाँ आज शोध की महत्वपूर्ण आधार बनी हैं।

कबीर बीजक की पाण्डुलिपियाँ

कबीर की बीजक पाण्डुलिपि हिंदी साहित्य व कबीर मत का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। लगभग 17वीं शताब्दी के आसपास इसकी पाण्डुलिपियाँ लिखी गईं; जिनमें कैथी, देवनागरी, महाजनी लिपि का प्रयोग हुआ। साखी, सबद, रमैयनी संकलनों के पाठ-वैविध्य ने आलोचना एवं संपादन परम्परा को समृद्ध किया है। बीजक के पाठ–भेद कबीर वाणी के मौलिक स्वरूप की खोज में सहायक रहे हैं।

प्रेमाख्यान काव्य की पाण्डुलिपियाँ

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में प्रेमाख्यान काव्य—जैसे मधुमालती, चंद्रावती, नल-दमयन्ती—की पाण्डुलिपियाँ सूफी परम्परा और देशज भावबोध का संगम हैं। देशभर के विश्वविद्यालयों व पुस्तकालयों में संरक्षित पांडुलिपियों में देसी व फारसी लिपि, लोक–विश्वास और विभिन्न जातीय अभिव्यक्ति के असंख्य उदाहरण मिलते हैं। इनमें सामाजिकता, प्रेम-संबंध एवं स्त्री-पुरुष संवेदना का सुन्दर चित्रण मिलता है।

साहित्यिक महत्त्व और पाठ-संपादन

हिन्दी पाण्डुलिपियाँ साहित्य के प्रामाणिक रूप की पुष्टि करती हैं। तुलसी, कबीर, सूरदास जैसे कवियों की रचनाओं में विभिन्न पाठभेदों के अध्ययन से उनकी समकालीनता, मौलिकता तथा सरंचना का ज्ञान होता है। क्षेत्रीय भाषागत विविधता, लोक सांस्कृतिक तत्व, सामाजिक–ऐतिहासिक संदर्भ, देवी–देवता, वीर वाणी और निर्गुण भक्ति की अवधारणा को पाण्डुलिपियों ने समृद्ध किया है।

आधुनिक आलोचना में पाठ-संपादन, डिजिटलीकरण, आलोचनात्मक संस्करण तैयार करना अति

आवश्यक हो गया है ताकि साहित्य के मौलिक एवं प्रामाणिक स्वरूप को स्थायी रूप से सुरक्षित किया जा सके। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, व विश्वविद्यालयीय केन्द्र इस ओर कार्यरत हैं[2][3].

संरक्षण की स्थिति एवं चुनौतियाँ

आज भी देश के दर्जनों पुस्तकालय, संग्रहालय, मठ-मन्दिरों, संस्थानों में हजारों अमूल्य हिंदी पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। आधुनिक काल में पाण्डुलिपियों की भूमिका पुस्तक प्रकाशन, आलोचना, भाषानुवाद, सांस्कृतिक पुनरुत्थान में अहम् है। तकनीकी विकास के कारण डिजिटलीकरण संभव हुआ है, जिससे पाण्डुलिपियाँ वैश्विक स्तर पर सुगमता से पहुँचाई जा सकीं।

किन्तु अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं :

- **संरक्षण की कमी:** नमी, कीट, उपेक्षा तथा वित्तीय संसाधनों का अभाव।
- **ज्ञान का अभाव:** नई पीढ़ी में हस्तलिखित साहित्य की महत्ता का बोध सीमित।
- **भाषा एवं लिपि की कठिनाई:** प्राचीन लिपि पढ़ने और अनुसंधान के लिए विशेषज्ञों की कमी।
- **आधुनिकीकरण-**अनुवाद, व्याख्या एवं सरल प्रस्तुति में अड़चन।

आधुनिक विमर्श एवं उपयोगिता

वर्तमान समय में हिंदी पाण्डुलिपियाँ न केवल साहित्यिक, बल्कि ऐतिहासिक, दार्शनिक और समाजशास्त्रीय शोध का सशक्त माध्यम हैं। अनेक शोध-परियोजनाएँ पाण्डुलिपियों पर आधारित हैं– इससे सांस्कृतिक स्मृति, ज्ञान-परंपरा और भाषाविकास की धारा समझी जा सकती है। विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, मिशन एवं सरकारी अभियान इस दिशा में आगे हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ हमारी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण भाग हैं। वे अतीत की स्मृतियों को जीवित रखकर आधुनिक साहित्य, शोध, आलोचना, भाषा–विकास, सांस्कृतिक पुनरुत्थान का शृंगार करती हैं।

उनका संरक्षण, संपादन, डिजिटलीकरण व जनसामान्य के लिए सुलभ बनाना साहित्य–समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि युवा शोधकर्ता इन्हें आधुनिक परिप्रेक्ष्य से देखें तो हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा, विविधता, गहराई का अनुभव अवश्य मिलेगा, जो भविष्य की दिशा तय कर सकता है

Sources

[1] मार्गदर्शिकाएँ: दक्षिण एशियाई अध्ययन: पांडुलिपि अध्ययन
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fguides.library.upenn.edu%2Fc.php%3Fg%3D1006790%26p%3D7500027&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[2] पांडुलिपि दिशानिर्देश https://hindi.hilarispublisher.com/manuscript-guidelines.html

[3] लेखकों के लिए गाइड - भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fshodhpatrika.co.in%2Fguide-for-authors%2F&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[4] शोध पत्र आमंत्रण
https://www.hansrajcollege.ac.in/hCPanel/uploads/focus/shodhsudha_notice_november-07_11_2020_page-0001.pdf

[5] सं॰ प्रशा॰ हिंदी. सेल ई पत्रित्र 22-23/02 **दिनांक:** 25/04/2022
https://agwb.cag.gov.in/files/agae/circular_order/Hindi_Magazine_%E2%80%9C_VANDE-MATARAM%E2%80%9D.pdf

[6] हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास https://www.du.ac.in/uploads/new-web/04012023_Appendix-107.pdf

[7] पांडुलिपि जमा करें – एशियाई विचारक
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Ftheasianthinker.com%2Fsubmit-manuscript%2F&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[8] शब्द ब्रहम - भारतीय भाषाओ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध ...
https://www.shabdbraham.com/ShabdB/search.php?mode=Hindi

[9] राजभाषा भारती https://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/rb168_1.pdf

[10] नाम https://bhu.ac.in/Content/FacultyCV/amitpandeyvns@bhu.ac.in.pdf

[11] Ramcharitmanas https://en.wikipedia.org/wiki/Ramcharitmanas

[12] Preface | The Bijak of Kabir - Oxford Academic
https://academic.oup.com/book/12866/chapter/163154533

[13] Kabir Bijak 4 | IndianManuscripts.com http://indianmanuscripts.com/kabir-bijak-4

[14] प्रेमाख्यानकार कवि जान और उनका कृतित्व- डाक्टर हरीश
https://sufinama.org/articles/sammelan-patrtika-articles-5

[15] हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य | Hindi Premakhyanak Kavya
https://epustakalay.com/book/70326-hindi-premakhyan-kavya-by-dr-kamal-kulshreshtha/